

जिया फूले (१९१)

साई झूलनि में झूले मेरा जिया फूले॥

आई रसीली तीज सुहाई हरियाली चंहू ओर है छाई
बादल झुक झुक देत वाधाई रे वाधाई रे
दामिनि बीच बीच तूले रे॥

चंहू खम्भे में झूला सजाया होले होले झूटा मेरे मन भाया
झूलनि झांकी ने रंग मचाया रे देह गेह की सुधि भूली रे॥

नन्हीं नन्हीं बून्दनि मींहड़ा बरसे

निरखि निरखि छबि हींयड़ा हर्षे

सावन सुख मन भावन सरसे रे मिटे सकल मन सूले रे॥

साई गोद में युगल विहारी शरद इन्दु से छबि उज्यारी
कैसी अनूपम शोभा है प्यारी रे देखो कालंदी की कूलें रे॥

साई साहिब को सखियां झुलावें

राग मल्हार मधुर मधुर सुर गावें

नाच नाच मन मोद बढ़ावें रे

हर्ष हर्ष हिय होली रे॥